CHETANA
International Journal of Education

Impact Factor
SJIF=5.689

Peer Reviewed/
Refereed Journal

ISSN-Print-2231-3613
Online-2455-8729

Prof. A.P. Sharma
Founder Editor, CIJE
(25.12.1932 - 09.01.2019)

Received on 28th Feb. 2021, Revised on 4th Mar. 2021, Accepted 9th Mar. 2021

आलेख

पानीपत और महाराजा सूरजमल

* डॉ. रामकुमार सिंह
सह आचार्य, हिन्दी विभाग
** डॉ. राजेन्द्र कुमार
सह आचार्य, राजनीति विज्ञान
राजकीय कला महाविद्यालय, सीकर, राजस्थान
Email: ramkumarsingh358 @gmail.com, Mo.-9460166640
Email: rajendrakumarsk9@gmail.com, Mo.- 9691967499

बीज शब्द – *पानीपत, जोधा–अकबर, पद्मावत, सूरजमल, जाट जाति का 'प्लेटो' आदि।*

ऐतिहासिक फिल्म 'पानीपत' को लेकर इस समय बड़ा विवाद चल रहा है। इससे पूर्व कुछ अन्य ऐतिहासिक फिल्मों 'जोधा–अकबर' और 'पद्मावत' को लेकर भी काफी बवाल मचा था। परिणामस्वरुप आंदोलन हुआ और फिल्म का प्रसारण राजस्थान समेत कुछ अन्य राज्यों में नहीं हो सका। ताजा विवाद 'पानीपत' फिल्म में इतिहास प्रसिद्ध महाराजा सूरजमल के चित्रण को लेकर है। हमने पूरी फिल्म तो नहीं देखी, पर कुछ दृश्य देखें हैं और समाचार पत्रों में भी पढ़ा है। महाराजा सूरजमल के चरित्र का फिल्मकार ने जो चित्रांकन किया है, वो इतिहास से मेल नहीं खाता है।

फिल्म में इतिहास विरूद्ध पहला आक्षेप यह है कि महाराजा सूरजमल की कद–काठी को औसत व्यक्तित्व के रूप में चित्रित करना। जबकि महाराजा सूरजमल एक लम्बे तगड़े और सुदृढ़ शरीर के योद्धा थे एवं उनकी भाषा, उस समय के फारसी इतिहास 'इमाद–उस–सादात' के लेखक गुलाम अली लिखता है कि " यद्धपि वह सूरजमल एक किसान जैसा पहनावा पहनता था और केवल अपनी बृज भाषा ही बोल सकता था, परन्तु वास्तव में वह जाट जाति का 'प्लेटो' था। चतुराई, बुद्धिमता और लगान तथा अन्य माल के महकमे में आसिफ जहाँ बाहदुर निजाम के सिवाय हिन्दुस्तान के प्रसिद्ध पुरूषों में और कोई उसकी समानता नहीं कर सकता था। जोश, साहस, चतुराई, अटूट–दृढ़ता, अजेय और न दबने वाला स्वभाव आदि सभी अपनी जाति के अच्छे–अच्छे गुण सूरजमल में एक विशेष अंश में पाए जाते थे।"

फिल्म 'पानीपत' में महाराजा सूरजमल को लालची और तटस्थ राजा के रुप में चित्रित किया गया है, जो इतिहास विरूद्ध है। आक्षेपों का निराकरण पानीपत के तृतीय युद्ध में महाराजा सूरजमल की भूमिका का मूल्यांकन तत्कालीन स्रोतों और इतिहास ग्रंथों से हो जाता है।

अधिकांश इतिहासकार ये मानते हैं कि सूरजमल अपने युग के सर्वाधिक शक्तिशाली, धनवान, युद्ध–कौशल–सम्पन्न और उदार शासक थे। उनकी अहमदशाह अब्दाली के आक्रमणों के समय में अपनायी गयी राष्ट्रवादी नीति और कार्य सूरजमल की महत्वपूर्ण

उपलब्धियाँ है। यह ऐसा समय था, जब एक और कुछ राजा, मराठों के उत्पीड़न से मुक्त होने के लिए तटस्थ बने रहे, तो दूसरी और दिल्ली का मुस्लिम सूफी संत शबी उल्लाह और उसका शिष्य नजीबुद्दौला भारत का इस्लामीकरण करने के लिए उसको बुला रहा था। तीसरी ओर देश के अधिकांश मुस्लिम नवाब अब्दाली की शरण में जा चुके थे और चौथे मराठा सेनापतियों की संकीर्ण मानसिकता की नीति। इन परिस्थितियों में सूरजमल ने ऐसी रणनीति अपनाई जो देश की जनता के हित में थी। अतः सबसे पहले तो सूरजमल ने सभी राजाओं का एक संघ बनाने का प्रयास किया जो राजाओं की दुर्बलता और संकीर्ण नीति के कारण सफल नहीं हो सका। दूसरा उन्होंने मराठा सेनापति भाऊ को समयोचित युद्धनीति अपनाने का परामर्श दिया था।

अतः उन्होंने आगरा युद्ध परिषद में सदाशिराव भाऊ को परामर्श दिया था कि चालाक और बड़ी सेना से सम्पन्न शत्रु से आमने–सामने का युद्ध न किया जाए, सिर्फ छापामार लड़ाई लड़ी जाए। युद्ध के मैदान मे औरतों और बच्चों के साथ न जाया जाए, क्योंकि इनकी सुरक्षा का ध्यान मुश्किलें पैदा करेगा। तीसरी, भारी तोपें लेकर युद्ध–भूमि में न जाया जाए, क्योंकि दबाव पड़ने पर अगर पीछे हटना पड़े तो बड़ी तोपें दुश्मन के हाथ लगेंगी। वह उनका प्रयोग हमारे खिलाफ करेगा। लेकिन शक्ति और घमंड में चूर भाऊ के समझ में सूरजमल के ये परामर्श नहीं आए। यही उनकी हार के कारण बने।

दिल्ली प्रयाण से पहले बाजीराव पेशवा और रघुनाथराव ने भाउ से कहा कि उत्तर भारत का सर्वाधिक शक्तिशाली, साधन–सम्पन्न और कुशल राजनीतिज्ञ महाराजा सूरजमल है, उसका साथ बनाकर रखना। लेकिन सूरजमल और गाजिउद्दीन द्वारा दिल्ली का किला हस्तगत करके और भाऊ को सौंप देने के बाद, उसकी नजरें पलट गयी। भाऊ की योजना थी कि पेशवा के पुत्र विश्वासराव को दिल्ली के तख्त पर बिठाकर दिल्ली के किले पर भगवा ध्वज फहरा दिया जाये। इसके अलावा उसने 'दीवाने–ए–खास' की छत में लगी चाँदी को निकलवाना शुरू कर दिया। सूरजमल ने इसका विरोध किया और कहा कि दीवाने–ए–खास की छत सांस्कृतिक विरासत है, इसको तोड़ना नाजायज है। इसके बदले में मैं पांच लाख रुपये आपको दे सकता हूँ। पर लोभ के लालच मे उसने सूरजमल की बात नहीं मानी। खास बात यह थी कि आगरा से दिल्ली आने तक भाऊ की सेना का सारा खर्च महाराजा सूरजमल ने दिया था। यही नहीं बिना लड़े ही दिल्ली का किला भी भाऊ को भेंट कर दिया था। फिर भी उसने सूरजमल के उचित प्रस्तावों को नहीं माना। पानीपत की ओर प्रयाण से पहले सूरजमल ने सुझाव दिया था कि अपनी सेना का केन्द्र दिल्ली में रखा जाए, ताकि जरुरत पड़ने पर रसद मेरे राज्य से मिलती रहे। भाऊ ने इस सुझाव को भी नकार दिया। यही नहीं उसने सूरजमल को बन्दी बनाकर उसके समस्त साधनों पर अधिकार करने की योजना भी बनाई थी। उसी शाम मल्हार राव और सिंधिया ने सूरजमल को दिए गए अपने वचनों की रक्षा के लिए उसको यह सूचना भिजवा दी कि आज रात को ही वह दिल्ली से चले जायें। अपने मंत्री रुपराम कटारा से विचार–विमर्श करके उसी रात सूरजमल, भाऊ का साथ छोड़कर वल्लभगढ़ चला गया। सूरजमल के चले जाने की सूचना मिलने पर भाऊ ने गुस्से में अपने होंठ काटते हुए सार्वजनिक रुप से कहा था, "भगवान ने चाहा, यदि दुर्रानी पराजित हो जाता है, तो क्या जाट का मामला उससे भी अधिक भारी हो सकता है ?" इस घटना से यह सिद्ध हो जाता है कि मराठों से शक्तिशाली होने पर भी सूरजमल ने अब्दाली के बजाय मराठों को पसंद किया था। पर वे अपने स्वाभिमान के साथ समझौता करने वाले व्यक्ति नहीं थे। विपत्ति में पड़े अपने घोर विरोधियों की सहायता करना वे अपना धर्म और आदर्श मानते थे।

भाऊ के दुर्व्यवहार के बावजूद सूरजमल की सहानुभूति मराठों के साथ थी। पानीपत में (14 जनवरी 1761) मराठों की पराजय कोई आकस्मिक घटना नहीं थी, परन्तु वह एक सुनिश्चित निष्कर्ष था। पानीपत के युद्ध में हजारों मराठा मारें गए, स्वयं सेनापति भाऊ भी मारा गया । भाऊ की विधवा पार्वती देवी सैंकड़ो अन्य महिलाओं, बच्चों, हजारों सैनिकों तथा सेनानायकों ने भागकर भरतपुर में शरण ली। उनकी चिकित्सा तथा सेवा सुरक्षा पर सूरजमल ने दस लाख रुपये खर्च किये और उनको अपनी सेना के सुरक्षा घेरे में उनके क्षेत्र में पहुँचाया। इतना उदार और मानवीय व्यवहार सूरजमल का था।

अब्दाली के सेनापति जहान खां और नजीबुद्दौला ने दिल्ली से आगरा तक के क्षेत्र को शमशान बनाने के लिए प्रस्थान किया था, तो उनके सामने जवाहर सिंह और उसके 4 हजार जाट सैनिक डटे थे।

मराठा शक्ति को नष्ट करके अब्दाली ने सूरजमल से उन तमाम लोगों को उसे सौंप देने का आदेश दिया था। लेकिन महाराजा सूरजमल ने उसको न तो किसी मुसलमान वजीर को सौंपा था और न मराठों को। उत्तर भारत के तमाम नवाब और राजा उसके

सामने झुक गए थे, यदि कोई झुका न था तो वह महाराजा सूरजमल ही थे। नजीबुद्दौला उत्तर भारत की जनता और मराठाओं की तबाही के लिए उत्तर भारत का इस्लामीकरण करना चाहता था। लेकिन उसके इस इरादे को विफल करने का श्रेय केवल महाराजा सूरजमल और उसके वीर पुत्र जवाहर सिंह को जाता है। पेशवा बाजीराव के बीमार होने पर जब उसकी प्रेयसी, मुस्लिम महिला मस्तानी को पुणे के कटरपंथियों ने भगा दिया था, तो उनको शरण देने वाले महाराजा सूरजमल ही थे। मस्तानी के नाम पर भरतपुर में आज भी मस्तानी सराय मौजूद है। इसी मस्तानी का बेटा जंग बहादुर मराठा पक्ष में लड़ो और घायल होकर भरतपुर पहुँचा, जहाँ उसकी चिकित्सा करवाई, पर वह बच नहीं सका। तब महाराजा ने मस्तानी सराय के सामने उसके नाम की एक मस्जिद बना दी। जो आज भी मौजूद है।उनके सर्व धर्म समभाव का श्रेष्ठ उदाहरण–मथुरा में जामा मस्जिद है। महाराजा सूरजमल धर्म या ईश्वर को मंदिर, मस्जिद तथा गिरिजाघर तक सीमित न मानकर आत्मा के उत्सर्ग और संस्कार का आधार मानते थे।

महाराजा सूरजमल की दृष्टि दिल्ली की मुगल सरकार के जन शोषण तथा उत्पीड़न करने वाले अधिकारियों को खत्म करके शहंशाह के नेतृत्व में एक लोक–रक्षक सरकार के गठन करने पर केंद्रित थी। उस युग में इस विचार और कार्य का समर्थन कोई दूसरा राजा या शासन न मुस्लिम वर्ग में था, न ही हिदुत्व का राग अलापने वाले मराठों में था और न हिन्दुओं की विविध जातियों में था। दुःख इस बात का है कि कला के नाम पर ऐसे महापुरूषों के साथ नाइंसाफी करना उचित नहीं है। रानी तोमरस से लेकर महाराजा सूरजमल, जवाहर सिंह, पंजाब केसरी रणजीत सिंह, भगत सिंह तथा आज तक हजारों–हजार वीरों ने इस देश की जनता, धर्म और संस्कृति की रक्षा के लिए अपने प्राण न्यौछयावर करते आये है। इन महापुरूषों को इतिहास में उचित स्थान देने की आवश्यकता है न कि धन के लालच में फिल्में बनाकर इनके चरित्रों के साथ खिलवाड़ करने की।

ऐसे महापुरूषों को संकीर्णता के घेरों और वादों में बांधा नहीं जा सकता। ये किसी जाति, धर्म या सम्प्रदाय के नहीं होते, ये तो पुरे राष्ट्र या देश के होते हैं, जिन पर हमें और हमारी आगे आने वाली पीढ़ियों को गर्व करना चाहिए और इनके आदर्शो पर चलना चाहिए।

सन्दर्भ

1. मुगल साम्राज्य का पतन (द्वितीय खण्ड)–(1972)–सर जदुनाथ सरकार–शिवलाल अग्रवाल एण्ड कम्पनी आगरा–3
2. जाटों का नवीन इतिहास–2(1685 ई– 1763 ई.) (1986)–उपेन्द्रनाथ शर्मा–मंगल प्रकाशन जयपुर–1
3. महाराजा सूरजमल (1985)–कुँ. नटवरसिंह–राधाकृष्ण प्रकाशन, दरियागंज नई दिल्ली
4. जाटों का इतिहास (2013)–प्रो. कालिका रंजन कानूनगो–ओरिजिनल्स अशोक विहार दिल्ली–फेज–4
5. हिन्दुस्तान में जाट सत्ता (2013) वैंदेल राधाकृष्ण प्रकाशन प्राईवेट लिमिटेड, दरियागंज नई दिल्ली

Corresponding Author

*** डॉ. रामकुमार सिंह**

सह आचार्य, हिन्दी विभाग

**** डॉ. राजेन्द्र कुमार**

सह आचार्य, राजनीति विज्ञान

राजकीय कला महाविद्यालय, सीकर, राजस्थान

Email: ramkumarsingh358 @gmail.com, Mo.-9460166640

Email: rajendrakumarsk9@gmail.com, Mo.- 9691967499